IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्रतीत्यसमुत्पाद का वैज्ञानिक चिंतन व उपादेयता

पुष्पलता
सहायक आचार्य
इतिहास
सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

सार

भारतीय विद्वानों ने समय–समय पर अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए गहन चिंतन–मनन के उपरान्त अनेक सिद्धान्तों का प्रतीपादन जीवन के विविध क्षेत्रों व विषयों में किया है। बौद्ध धर्म में प्रतीत्य समुत्पाद एक ऐसा सिद्धान्त है, जो धर्म से संबंधित है, किन्तु इसका आधार–स्वरूप विज्ञान है। अनेकानेक विद्वानों ने धर्मों का प्रणयन किया है किन्तु सम्भवतः तथागत गौतम बुद्ध एक मात्र ही दिखाई देते हैं जिन्होंने वैज्ञानिकता पर आधारित, व्यवहारिक व वास्तविक बौद्ध धर्म की नींव रखी। इस सिद्धान्त के प्रणेता तथागत बुद्ध हैं जिनका जन्म 563 ई.पू. में शाक्य गणराज्य के राजा शुद्धोधन व महामाया के घर हुआ था।

प्रस्तुत शोध–पत्र में वैज्ञानिक–चिंतन व मनन करने का प्रयत्न किया गया है कि, प्रतीत्यसमुत्पाद, के सिद्धान्त, में कैसे व किस सीमा तक विज्ञान की विशेषताऐं समावेषित हैं और इस स्वरूप के कारण मनुष्य जीवन, में इसका अनुसरण करके इसकी किस प्रकार से उपादेयता प्राप्त की जा सकती है।

कुंजी–शब्द :– क्रिया अनुसंधान, दुःख, परिवेश, अनुसरण, आश्रित–व्युत्पत्ति, बीज, उपादान, तृष्णा, नामरूप, अविधा, श्रृंखलाबद्ध, सार्वभौमिक, भविष्यवाणी, हेतु, अन्वेषण, निर्वाण

शोध उद्देश्य

प्रतीत्यसमुत्पाद का वैज्ञानिक आधार क्या है ? वे कौन से तथ्य हैं जो इसे वैज्ञानिक सिद्धान्त का रूप प्रदान करते हैं ? इसमें किस प्रकार वैज्ञानिक–चिंतन निहित है ? मनुष्य किस प्रकार तर्क के आधार पर इसका अनुसरण कर सकता है ? मनुष्य के हित हेतु इसमें क्या उपाय संभव है ? आदि कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर जानने का प्रयत्न करते हुए प्रतीत्यसमुत्पाद के वैज्ञानिक–चिंतन को समझने का प्रयत्न किय गया है, ताकि इसके अनुप्रयोग मनुष्य के हित में संभव हो सके।

शोध प्रविधि :–

प्रस्तुत शोध–पत्र अध्ययन व विश्लेषण के आधार पर क्रिया–अनुसंधानात्मक प्रकार का है। वास्तविक समंकों का चयन करके कार्य–कारण के आधार पर क्रमबद्ध अध्ययन किया गया है। प्राथमिक व द्वितीयक स्त्रोतों के सहयोग से मौलिक–चिंतन के आधार पर नवीन निष्कर्ष प्राप्त करने का प्रयत्न किया गया है।

भूमिका :–

बौद्धिक संसार में चिंतन द्वारा नवीन ज्ञान का सृजन होता है एवं ऐसे सृजन मानव जीवन के लिए सदैव हितकारी रहे हैं। विचारशील मनुष्य स्वयं के जीवन व निकट परिवेश में घट रही घटनाओं को अनुभव करके, किन्हीं विशेष विषयों पर प्रश्नों पर विचार करने का प्रयत्न करते हैं एवं इस चिंतन के आधार पर जो नवीन ज्ञान का सृजन करते हैं, उसमें मनुष्य जीवन की समस्याओं के समाधान व हित विद्यमान होते हैं। तथागत गौतम के विचारों में केन्द्रिय सिद्धान्त, प्रतीत्य समुत्पाद का है, जिसका स्वरूप वैज्ञानिक है। विज्ञान की तरह तथ्यों को विवेक आधारित तर्क की कसौटियों पर जाँचा गया है, जिससे इसे वैज्ञानिक आधार मिला है। इस कारण न मात्र आस्तिक अपितु नास्तिक मनुष्यों को भी इसको मानने में कोई आपत्ति नहीं हो सकती है। इस सिद्धान्त में स्पष्ट किया गया है कि मनुष्य के दुःख का कारण ईश्वर नहीं अपितु मनुष्य स्वयं व उसके कर्म हैं। यदि मनुष्य कर्मों की उत्पत्ति का कारण व उससे उत्पन्न व्युत्पत्ति का क्रम जान ले तथा उस कारण व प्रत्येक स्तर पर व्युत्पत्ति क्रम का निरोध करने का प्रयत्न करे तो कर्म–चक्र से मुक्त होकर निर्वाण प्राप्त करके "तथागत" हो सकता है। प्रतीत्यसमुत्पाद के सिद्धान्त में दुःख के कारण तो स्पष्ट किए ही एवं मुक्ति के उपाय व अनुसरण की प्रक्रिया भी स्पष्ट की गई है।

प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धान्त :– वह सिद्धान्त बौद्ध धर्म का केन्द्रिय व मौलिक सिद्धान्त है, जो सम्पूर्ण बौद्ध–दर्शन की आत्मा ही है। आचार्य चन्द्रकीर्ती के अनुसार "प्रतीत्यसमुत्पाद का शाब्दिक अर्थ हेतु प्रत्यय की उपेक्षा कर भावों का प्रार्दुभाव है।"

इस सिद्धान्त का सार यह है कि इस संसार में जितनी भी घटनाऐं हैं, उनका कोई न कोई कारण अवश्य होता है। अन्य शब्दों में यह कार्य–कारण वाद है कारण। हेतु के होने पर कार्य की उपस्थिति। एक के होने पर दूसरे की उपस्थिति। एक वस्तु व घटना एवं परिस्थिति के होने पर दूसरे की उत्पत्ति होना। इसलिए इसे आश्रित–व्युत्पत्ति का सिद्धान्त भी कहते हैं। बीज कारण है वृक्ष का, जिसके अंकुरित एवं पल्लवित होने में वायु, प्रकाश, मिट्टी, पोषण का योगदान होता है। वृक्ष पुनः बीज उत्पन्न करता है व कारण बनता है। इस प्रकार कार्य–कारण की श्रृंखला से व्यवस्था बनी रहती है। ऐसा ही मानव–जीवन की व्यवस्था में भी है। जन्म कारण है आयु का और आयु मृत्यु का एवं मृत्यु फिर कारण है जन्म का। इस प्रकार यह

व्यवस्था, गतिमान रहती है। मनुष्य जब स्वयं प्रयत्नों से कर्म का प्रवाह रोक देता है तो निर्वाण प्राप्त कर लेता है एवं यह कार्य–कारण श्रृंखला खत्म हो जाती है। तथागत बुद्ध ने अनुलोम चिंतन के आधार पर दुःख समुदाय को तथा प्रतिलोम चिंतन के आधार पर दुःख निरोध का मार्ग प्रतीत्यसमुत्पाद में बताया है।

प्रतीत्यसमुत्पाद के 12 अंगों को द्वादष–निदान कहा है–

(1) **जरा–मरण का कारण जाति**–जरा यानि वृद्धावस्था का कारण जाति या जन्म है। जन्म ही न होता तो वृद्धावस्था न आती एवं वृद्धावस्था न आती तो मृत्यु न होती। सत्काय जब माता के गर्भ में आती है तब उसके रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार व विज्ञान का प्रकट होना जाति या जन्म है।

(2) **जाति का कारण भव** – जाति या जन्म का कारण भव अर्थात् सत्काय के जन्म लेने की इच्छा या प्रवृत्ति जो वास्तव में पिछले जन्म के कर्म है जिनके कारण व्यक्ति का पुर्नजन्म होता है।

(3) **भव का कारण उपादान** :– मनुष्य के भव के लिए उपादान कारण है। उपादान यानि सत्काय ने जिन संस्कारों को दृढ़तापूर्वक ग्रहण कर लिया हो जैसे जो उसकी चेतना में संचित हो, ये ही भव का कारण स्वरूप है।

(4) **उपादान का कारण तृष्णा** :– उपादान की उत्पत्ति का कारण तृष्णा है, जिसका तात्पर्य विषयों के प्रति गहन इच्छा है। संयुक्त निकाय में छः प्रकार की तृष्णा का उल्लेख है– रूपतृष्णा, शब्दतृष्णा, गंधतृष्णा, रसतृष्णा, स्पर्षतृष्णा एवं धर्म तृष्णा। तृष्णा की पूर्ति के लिए मनुष्य उद्यम करता है, जिससे कर्म सृजित होता है।

(5) **तृष्णा का कारण वेदना** :– तृष्णा का कारण वेदना है, वेदना का तात्पर्य मनुष्य की इन्द्रियों व विषयों के संयोग से मन पर जो प्रभाव पड़ता है। वेदना तीन प्रकार की होती है– दुःखात्मक, सुखात्मक, अदुःखासुखात्मक। जो सब वेदनाओं से विलग है, वह ही पूर्ण ज्ञानी है।

(6) **वेदना का कारण स्पर्ष** :– वेदना का कारण स्पर्श है। स्पर्श में इन्द्रियों व विषयों का सहयोग रहता है। स्पर्श को जानकार इसका निरोध करने से व्यक्ति वेदना से मुक्त हो सकता है।

(7) **स्पर्श का कारण षड़ायतन** :– षड़ायतन अर्थात् चक्षु, श्रोत, त्वच, ध्राण, रसना, मन से स्पर्श होता है। जो व्यक्ति अभ्यास द्वारा भीतर व बाहर से अपने मन पर नियंत्रण कर लेता है वही श्रेष्ठ है।

(8) **षड़ायतन का कारण नामरूप** :– जितनी भी भौतिक वस्तुऐं हैं वे 'रूप' एवं जितनी सूक्ष्म मानसिक अवस्थाऐं हैं समग्र रूप से वे 'नाम' हैं। नाम, रूप संयुक्त होकर षड़ायतन के साथ स्पर्ष उत्पन्न करते हैं। इसी से मनुष्य में विषय वासना उत्पन्न होती है।

(9) **नामरूप का कारण विज्ञान** :— जीव में गर्भावस्था के दौरान पंचस्कन्धों आना विज्ञान है, जो इस जन्म में मनुष्य के ऐन्द्रिक सुख तथा अनुभूतियों का कारण बनती है। विज्ञान ही नामरूप का कारण होता है।

(10) **विज्ञान का कारण संस्कार** :— संस्कार अर्थात् पूर्व जन्मों के संचित कर्म विज्ञान का कारण है। अन्य शब्दों में संस्कार पूर्व जन्मों की वह अवस्था है, जिसमें अविद्या के कारण व्यक्ति अच्छे—बुरे कर्म करता है, जो वर्तमासन जन्म में भी उसके चित्त में संग्रहित रहते हैं। तथागत बुद्ध के अनुसार संस्कारों का सम्पूर्ण निरोध करने से व्यक्ति समस्त बंधनों से मुक्त हो जाता है।

(11) **संस्कार का कारण अविद्या** :— संस्कार का कारण अविद्या अर्थात् सुज्ञान है। अवास्तविक को वास्तविक समरूना एवं दुःखमय को सुखमय अनुभव करना यह अविद्या है। अविद्या के कारण मनुष्य निरन्तर कर्म संचित करता रहता है तथा जन्म व मृत्यु के चक्र में फँसा रहता है। सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति से अविद्या का क्षय संभव है जिसके फलस्वरूप समस्त संस्कारों का भी क्षय हो जाता है।

(12) **अविद्या** :— अविद्या अर्थात् अज्ञान ही समस्त कर्म, सुख—दुःख, जन्म—मरण, आदि व्याधि का हेतु है। बौद्ध दर्शन में अविद्या का अर्थ—दुःख समुदाय, दुःख निरोध एवं दुःख निरोध मार्ग अर्थात् अष्ठांगिक मार्ग का ज्ञान न होना है। इन चार आर्य सत्यों का ज्ञान न होने पर मोह उत्पन्न होता है।

निष्कर्षतः प्रतीत्यसमुत्पाद सापेक्ष कारणतावाद है। प्रतीत्यसमुत्पाद के ये द्वादश अंग या निदान है जो एक दूसरे के कारण उत्पन्न होते हैं। इन अंगों के अनुलोम चिंतन से दुःख समुदाय का बोध होता है तथा प्रतिलोम चिंतन से दुःख निरोध का मार्ग संरेखित होता है।

प्रतीत्यसमुत्पाद में वैज्ञानिक चिंतन :— विज्ञान का तात्पर्य उस विशिष्ट ज्ञान से है, जो हमारे दैनिक जीवन व संबंधित परिवेष में अनुसंधान द्वारा प्राप्त किया जाता है। यह ज्ञान परीक्षण, अन्वीक्षण एवं तार्किक चिंतन द्वारा प्राप्त श्रृंखलाबद्ध ज्ञान होता है। तथागत बुद्ध ने स्वयं के परिवेश में दुःख की घटना देखी तथा पर्यवेक्षण के उपरान्त मानसिक—अन्वीक्षण एवं तार्किक विश्लेषण के आधार पर ज्ञात किया कि दुःख के हेतु रूप में एक क्रमबद्ध श्रृंखला विद्यमान है। इस प्रकार उन्होंने दुःख का वास्तविक स्वरूप व आधार ज्ञात किया। विज्ञान का मुख्य उद्देश्य भी घटनाओं के पीछे वास्तविक सत्य प्राप्त करना होता है। तथागत बुद्ध के प्रतीत्यसमुत्पाद से प्राप्त निष्कर्ष मनुष्य के लिए उसी प्रकार हितकारी हुए हैं जिस प्रकार विज्ञान में अनुसंधान के निष्कर्ष होते हैं। तथागत बुद्ध ने प्रतीत्यसमुत्पाद में दुःख निरोध का क्रमबद्ध तरीका बताया है, जिसके अनुसरण से व्यक्ति मुक्ति पाकर सम्यक् हो सकता है। यह बौद्ध—दर्षन में अंतिम सत्य को प्रतिपादित

करने वाला सिद्धान्त है। विज्ञान की तरह इसमें भी मानवीय व्यवहार व उसके आधार पर प्राकृतिक परिवेष में मनुष्य जीवन की शुद्धता से व्याख्या की गई है।

विज्ञान में सिद्धान्त प्रतिपादन का एक निश्चित क्रम होता है–घटना का अनुभव→घटना का स्पष्टीकरण→घटना से संबंधित तथ्यों का विश्लेषण→कार्य व कारण सम्बन्ध स्थापित करना→परिकल्पना का निर्माण→सार्वभौमिक व प्रामाणिक निष्कर्ष निकालना→भविष्यवाणी करना।

तथागत बुद्ध का प्रतीत्यसमुत्पाद भी विज्ञानवाद ही है क्योंकि बुद्ध ने सर्वप्रथम स्वयं दुःख का अनुभव किया, जो उन्होंने प्राकृतिक परिवेश में मनुष्य जीवन के पर्यवेक्षण से प्राप्त हुआ, तत्पष्चात् उन्होंने तार्किक–विश्लेषण के आधार पर मानसिक–अन्वीक्षण किया एवं स्पष्टीकरण दिया कि समस्त मानव संसार दुःखमय है, आदि–व्याधि, जन्म–जरा–मृत्यु, शोक, पीड़ा, राग–दैष, ईर्ष्या, चिंता सभी दुःख हैं। तत्पश्चात् इनके कारण तत्वों का विश्लेषण किया अंततः परिकल्पना प्रस्तुत की। समस्त दुःखों का मूल कारण अविद्या है तथा अविद्या को समाप्त करके दुःखों से मुक्ति संभव है।

जिस प्रकार विज्ञान के सिद्धान्त में मुख्य आधार कार्य–कारणवाद होता है उसी प्रकार प्रतीत्यसमुत्पाद में भी कार्यकारण ज्ञात है। दुःख का मूल कारण अविद्या है, अविद्या का कारण संस्कार, संस्कार के कारण विज्ञान, विज्ञान के कारण नामरूप, नामरूप के कारण षड़ायतन, षड़ायतन के कारण स्पर्श, स्पर्श के कारण उपादान, उपादान के कारण भव, भव के कारण जन्म–जरा–मृत्यु और अंततः शोक, पीड़ा, चिंता, भय आदि दुःख के विकार उत्पन्न होते हैं। फलस्वरूप समग्र दुःख समुदाय उत्पन्न होता है। यह इस सिद्धान्त में तथागत बुद्ध का अनुलोम चिंतन है। इस कार्य–कारण श्रृंखला को खण्डित करने के लिए अविद्या का विनाश आवश्यक है, जिससे क्रमशः संस्कार, विज्ञान, नामरूप, षड़ायतन, स्पर्ष, वेदना, तृष्णा, उपादान, भव, जाति एवं जरा मरण की श्रृंखला का भी क्षय हो जाता है एवं चित्त से दुःख समुदाय का भी समूल क्षय हो जाता है यह प्रतिलोभ चिंतन है।

इस सिद्धान्त का यह चिंतन स्थान व काल से परे सार्वभौमिक है जैसा कि विज्ञान का चिंतन व निष्कर्ष सार्वभौमिक होते हैं। विज्ञान के समान इसमें भविष्यवाणी भी की गई है कि अविद्या का नाश करके दुःख का अंत संभव है, जिससे मनुष्य आत्म–कल्याण व 'निर्वाण' की अवस्था प्राप्त कर सकता है। विज्ञान के सिद्धान्त भी मनुष्य के कल्याण हेतु उपयोग किए गए हैं जैसे–भाप के आविष्कार से रेल इंजन।

निष्कर्ष :– प्रतीत्यसमुत्पाद के प्रतिपादक तथागत बुद्ध की विचारधारा आस्तिकतावाद व नास्तिकतावाद से परे विज्ञानवाद पर आधारित थी उन्होंने जो देखा व अनुभव किया उस पर स्वयं विवेक से तर्क के आधार

पर प्रत्येक दृष्टि से गहन व व्यापक विश्लेषण करने के पश्चात् प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धान्त प्रकाशित किया। तथागत बुद्ध ने विज्ञान की तरह पूर्व धारणाओं से मुक्त होकर स्वतंत्र एवं मौलिक चिन्तन के आधार पर कार्य–कारण को स्पष्ट करते हुए नवीन ज्ञान का सृजन किया, प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धान्त दिया।

तथागत बुद्ध ने मनुष्य जीवन की प्रयोगशाला में दुःख की घटना को देखा एवं घटना का मानसिक अन्वेषण करके उसके कारण, परिस्थितियों व क्रमिक स्वरूप को ज्ञात किया। इस प्रकार तथागत ने दुःख–समुदाय का सत्य ज्ञात करके उसके निदान की परिकल्पना भी प्रस्तुत की। मूल कारण अविद्या यानि अज्ञान को समाप्त करके सम्यक् ज्ञान द्वारा दुःख का निरोध संभव है। इस प्रकार मनुष्य दुःखों से मुक्त होकर सम्यक् स्थिति प्राप्त करके आत्म–कल्याण के पथ पर अग्रसर हो सकता है।

संदर्भ

1. सांस्कृत्यायन, राहुल, 1648, 'बौद्ध–दर्शन', किताब महल, इलाहाबाद, पृ.सं. 33–36 https://epustakalay
2. शास्त्री चतुरसेन, आचार्य, 1640, 'बुद्ध और बौद्ध धर्म', हिन्दी साहित्य मण्डल, देहली, पृ.सं. 80–85 https://epustakalay
3. श्री कृष्ण, आनंद, 2009, 'भगवान बुद्ध व ध्म्मसार', हिन्दी पॉकेट बुक्स, गुडगाँव, हरियाणा, अध्याय–4, पृ.सं. 113–120
4. अनु गौतम, लाल सिंह, 2017, 'सुत्तपिटक' बुद्धिष्ठ वर्ल्ड प्रेस, दिल्ली, पृ.सं. 127–132
5. राधो, नीलचन्द, 2013, 'बौद्ध दर्शन का सैद्धान्तिक आधार', अरूण पब्लिकेशन हाउस, प्राईवेट लिमिटेड़, चण्डीगढ़, पृ.सं. 71–76
6. वासनिक, के.पी., 2023, 'गौतम बुद्ध से सीखें जीवन जीने की कला' प्रभात प्रकाशन प्राईवेट लिमिटेड़, नई दिल्ली, पृ.सं. 184–213
7. Social worker / 30 May/2024/Sociology विज्ञान क्या है ? अर्थ, परिभाषा, मूलभूत आधार, विशेषताऐं। https://social-work.in